Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024
ISSN: 2347-2979

ठेस : सृजनात्मकता एवं जीवटता का जीवंत प्रतिरूप

प्रो० चंद्रकांत सिंह , प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हि० प्र०)
मोबाईल नंबर- 9805792455
ईमेल- chandrakants166@hpcu.ac.in

एवं

आशीष कुमार मौर्य, शोधार्थी, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
मो० न०-8808868252
ईमेल-ashish319155@gmail.com

फणीश्वरनाथ रेणु एक आंचलिक कथाकार हैं । वे अपनी कहानियों तथा उपन्यासों में क्षेत्र विशेष या आंचलिक घटनाओं को प्रमुखता से उठाते हैं । रेणु जी की गिनती भले ही आंचलिक कथाकारों में की जाये परंतु वे समाज की जिन घटनाओं को लेकर अपनी लेखनी चलाते हैं वह कहीं न कहीं संपूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करती है । 'मैला आँचल' की कथा हो या 'पंचलाइट', 'रसप्रिया', 'तीसरी कसम', 'लाल पान की बेगम' आदि रेणु जी की ख्यातिलब्ध कहानियाँ | इन सभी कथाओं में लोक-अंचल की छाप के साथ गँवईपन, देशजता एवं स्थानीयता आदि के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं | रेणु जी ने इन रूपों को गहरे टहकार रँगों के साथ व्यक्त किया है | यही उनकी कहानी कला की सशक्तता है जिसमें जीवन-माटी की अपूर्व गंध है | उनके विषय में यह कहा जा सकता है कि- **"अमर कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास अगर लोकजीवन के महाकाव्य हैं, तो उनकी कहानियाँ अविस्मरणीय कथा-गीत। ये मन के अछूते तारों को झंकृत करती हैं। इनमें एक अनोखी रसमयता और एक अनोखा सम्मोहन है।"**[1] यदि रेणु जी के व्यक्ति-चरित्र पर ध्यान दें तो यह संघर्षों की चाप से भरा हुआ है | उन्होंने जीवन में अभूतपूर्व संघर्ष किया है जो

ISSN: 2347-2979

उनकी कहानियों में आसानी से देखा जा सकता है | रेणु जी अपने जीवन काल में जयप्रकाश नारायण के समाजवादी आंदोलन से भी जुड़े रहे । इस आंदोलन का प्रभाव उनके साहित्य पर भी खूब पड़ा। उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा यह बताना चाहा है कि व्यक्ति-मन का यथार्थ-चित्रण आवश्यक है, यही कारण है कि उनकी कहानियाँ प्रेमचंद की कहानियों की तरह हमारे आस-पास के जीवन को चित्रित करती हैं | इन कहानियों में पसरा हुआ जीवन हमारे गाँवों की दशा-दिशा, चिंता-दुश्चिंता एवं राग-विराग आदि को दिखाने वाला है | रेणु जी ने जयप्रकाश आन्दोलन से जो कुछ भी सीखा या कह लें कि आयत्त किया उसे अपनी कहानियों में बखूबी दिखाया है | उनकी कहानियों के संदर्भ में कह सकते हैं उनकी कहानियाँ भारत की उर्वर जमीन को दिखाती हुई कहानियाँ हैं जिनमें व्यक्ति समाज की आकुल कथाओं का भी दिग्दर्शन होता है | फणीश्वरनाथ रेणु की 'ठेस' कहानी 'ठुमरी' नामक संग्रह में संकलित है ।'ठुमरी' कहानी संग्रह का प्रकाशन 1959 ई० में हुआ। इस कहानी संग्रह में कुल 09 अति चर्चित कहानियाँ संग्रहीत हैं। इन कहानियों को पढ़ने पर लगता है जैसे रेणु जी ने अपने प्राणों का रस घोल डाला है जिससे कि हृदय की कोमलतम अनुभूतियाँ औचक चकमक की भाँति सुगबुगा उठी हों । 'रसप्रिया', 'ठेस', 'तीसरी कसम' या 'लाल पान की बेगम' आदि सभी कहानियों में रेणु जी की प्रतिभा, वाग्विदग्धता एवं कला-वैभव का दर्शन होता है | वे अपनी कहानियों के द्वारा केवल व्यक्ति एवं उनके समूहों की कथा भर नहीं कहते बल्कि इन कहानियों के द्वारा महत्वपूर्ण स्थापत्य का रचाव भी करते हैं | यही रेणु जी की कहानियों की सार्थक एवं अनूठी पहचान है | इस संग्रह की सभी कहानियाँ मानव-मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में समर्थ हैं । 'ठेस' कहानी की कथा सिरचन के इर्द-गिर्द चलती है जो शीतलपाटी बनाने का एक कारीगर है। उसके जैसा लोक-चर्चित कारीगर उस इलाके में कोई और नहीं है। 'ठेस' कहानी में जिस कथा का वर्णन हुआ है वह कथा केवल कथाकार के गाँव की नहीं बल्कि देश के सभी गाँवों व कस्बों की है जहाँ कोई न कोई सिरचन जैसा अपने क्षेत्र का दुर्लभ कलाकार होता है ।आज हम जितना वैश्विक स्तर पर मजबूत होते जा रहे हैं वैसे-वैसे हम अपने क्षेत्रों से कटते जा रहे हैं या कह लें कि

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

हमारी स्थानीयता छीज रही है और विदेशी दबाव एवं लगाव में हम अपनी प्रतिभा एवं सम्पन्नता से दूर हो रहे हैं | यही नहीं हमारे गाँवों-कस्बों की धरोहर के रूप में जाने जाने वाले लोक-कलाकार भी हमारी पहुँच से परे होते जा रहे हैं या उन्हें जान-बूझकर सत्ता द्वारा विस्मृत कर दिया जा रहा है |

इस दौर में न जाने कितनी लोक कलाएँ और कलाकार विलुप्त हो गये हैं और जो नहीं हुये वे अपना अस्तित्व क्रमशः खो रहे हैं। इन कलाकारों का स्थान मशीनें लेती जा रही हैं । शहरों में बड़ी-बड़ी कंपनियाँ स्थापित हो गयी हैं । इन कंपनियों में मशीनों द्वारा किसी भी वस्तु का उत्पादन बड़े पैमाने पर हो रहा है। कंपनियों से उत्पादित सामान शहर से होते हुये गाँवों तक पहुँच रहे हैं । इन कंपनियों के मालिक बाज़ारवाद के तहत काम करते हैं । उत्पादित वस्तुओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अव्वल तो मूल्य कम कर देते हैं किंतु जैसे ही माँग बढ़ने लगती है वैसे ही मूल्य बढ़ा देते हैं । इस तरह से लोक कारीगरों की कमर ही टूट जाती है और संप्रभुओं का बोल-बाला हो जाता है । कारीगर शनैः शनैः 'बेगार' समझे जाने लगते हैं जैसे कि इस कहानी में सिरचन समझा जाता है | फणीश्वरनाथ रेणु बाज़ारवाद के इस मकड़जाल को खूब समझते हैं तभी तो सिरचन जैसे लोक-कलाकारों के दुःख-दर्द को सामने लाने का प्रयास करते हैं। वे इस कहानी में कहते हैं कि- **"खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। क्या होगा, उसको बुलाकर? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय .....।"**[2] बाज़ारवाद के फैलते खूनी पंजों के कारण सिरचन जैसे कलाकार स्वयं की कलाकारी छोड़ने पर अभिशप्त हो गये हैं क्योंकि अब इनके काम को कोई नहीं पूछता है और न ही इनके द्वारा बनाये गये सामान को कोई खरीदता ही है । आज सभी ऑनलाइन शॉपिंग पसंद करते हैं । ऐसे में यह कहानी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इस कहानी में बाजारवाद की पूर्व झलक देखी जा सकती है | उदारवादी युग में लोग कारीगरों एवं श्रमिकों द्वारा तैयार किए गए सामानों की बजाय उन्मुक्त व्यापार की नई रस्म को ही पसंद करते हैं यही नहीं ऑनलाइन शॉपिंग के लिए या वस्तुओं की खरीद फ़रोख्त के लिए लोगों को भले ही औने-

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

पौने दाम क्यों न देने पड़ें ? उन्हें यह वाजिब जान पड़ता है | पहले इस तरह के कलाकारों का प्रत्येक क्षेत्र में मान था । उस समय समाज पर पूँजीवाद और बाज़ारवाद उतना हावी न था जितना अब है ।ऐसे में इन कलाकारों के यहाँ गाँव के बड़े-बड़े बाबुओं की भीड़ लगी रहती थी । लोग इज्जत देते थे और यह भी कहते थे कि इस इलाके में केवल तुम्हारी ही कारीगरी रह गयी है लेकिन आज सिरचन जैसे कलाकारों की कोई इज्जत नहीं रही और न ही उनके पास काम हैं- **"....आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था, जबकि उसकी मड़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे.....।"**[3] फणीश्वरनाथ रेणु को लोक की बहुत अच्छी समझ थी और वे स्वयं लोक से जुड़े थे।इसलिए वे अपनी प्रत्येक रचना की कथा और नायक लोक से चुनते हैं। यह रेणु जी की बहुत बड़ी विशेषता है। हम अक्सर देखते हैं कि कोई भी बड़ा लेखक किसी बड़े परिदृश्य की समस्या का वर्णन कर अंचल विशेष तक पहुँचने की कोशिश करता है परंतु रेणु जी ऐसा नहीं करते हैं। वे लोक या अंचल विशेष की छोटी से छोटी समस्याओं को सामने लाकर उनको दूर करने का प्रयत्न करते हैं जिसमें लोक घुट रहा होता है। 'ठेस'कहानी का नायक सिरचन भी लोक का नायक है। उसके अंदर लोक की सारी खूबियाँ विद्यमान थीं। वह अपने काम को बहुत तन्मयता से करता था। यदि उसकी तन्मयता में जरा-सी बाधा पड़ी तो वह कह उठाता था- **"फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम! सिरचनमुँहजोर है, कामचोर नहीं।"**[4] सिरचन की विशेषता यह थी कि दूध में मिठास न मिले उसे स्वीकार था किंतु यदि बात में ज़रा भी कड़वाहट समझ आती थी तो उसे वह बर्दाश्त नहीं थी । यहाँ उसके कलाकार व्यक्तित्व का पता चलता है | कलाकारों की विशेषता होती है कि वे सामान्य व्यक्तियों से विलग होते हैं, उन्हें समझ पाना ज़रा मुश्किल है, स्वभाव से अत्यंत नरमदिल एवं अस्थिरता बहुधा कलकारों का स्वभाव होती है जो सिरचन में भी थी | किंतु एक बड़ी बात यह कि वह नेक दिल था जो अपनी बात बिना लाग-लपेट के कह डालता था | । लोक में ऐसे अनेकों कलाकार मिलते हैं जिनको केवल अच्छा भोजन खिलाकर खुश किया जा सकता है ,जिस पर वे

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

घंटों अनथक काम करते हैं | किंतु यदि उनसे बे-मुरव्वत व्यवहार किया जाए तो वे अपने सभी कामों को बीच में ही रोकने से नहीं हिचकते | सिरचन भी कुछ ऐसा ही था, जिसे भोजन से अगाध प्यार था | उससे काम लेने का मतलब था कि उसे कोई उसकी रुचि का भोजन करा दे | सिरचन की तरह जीवन में पूरी तरह धँसे हुए कलाकार मात्र भोजन पर ही खुश हो जाते हैं । उनको मजदूरी से मतलब नहीं होता, उन्हें अपना स्वाभिमान एवं अपनी प्रतिष्ठा सर्वाधिक प्रिय होती है | बात यदि उनके स्वाभिमान पर आती है तो वे अपनी अन्तरप्रज्ञा के अतिरिक्त किसी की नहीं सुनते । एक तरह से यह सच्चे लोक-कलाकारों की खूबी भी है। आजकल ऐसे कलाकार दुर्लभ हो चुके हैं, सिरचन भी कुछ ऐसा ही है। उसे यदि तली-बघारी हुई सब्जी और मलाई वाला दूध मिल जाये तो वह काम करने हाजिर हो जाता है। यदि खाने में कुछ भी कमी महसूस हुई तो वह काम अधूरा छोड़कर चल देता है- **"....तली-बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाई वाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई ख़त्म! काम अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा.....।"**[5] फणीश्वर नाथ रेणु ने सिरचन के बहाने कलाकारों के मूड्स को उठाने के साथ, उनकी पसंद, नापसंद आदि सभी चीजों को कहीं गहरे देखने का कार्य किया है | चूँकि रेणु जैसे साहित्यकारों की पैठ जीवन में कहीं गहरे है, यही कारण है कि उन्हें व्यक्ति-मन की सही पहचान है | उन्होंने अपनी कहानी के नायक सिरचन को भी लोक में आकंठ डूबे हुए और अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह तन्मय दिखाया है | एक दिलचस्प बात यह है कि जिस समय के परिवेश को रेणु जी अपनी कहानी में उठाते हैं, उस समय श्रम का उचित मूल्य भी कलाकारों को नहीं मिल पाता है | कलाकारों से लोग बेगार करा लिया करते थे किंतु उन्हें उनका उचित पारिश्रमिक नहीं देते थे जिससे कि कलाकारों का मनोबल प्रायः टूट जाता था | प्रस्तुत कहानी में भी सिरचन के माध्यम से देखा जा सकता है कि वह अपने काम में पूरी तरह तल्लीन है किंतु लोगों के द्वारा सिवाय बेहयाई एवं अभद्रता के उसे कुछ हासिल नहीं होता | आज समय बदला है,मशीनों से भरे इस वैज्ञानिक युग में कलाकारों के साथ

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

व्यवहार भी कुछ नरम हुआ है किंतु ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वह पूर्णतः दरियादिली से युक्त है | सिरचन मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी के साथ-साथ बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी आदि बनाने में दक्ष था जिसे उसके सिवाय गाँव में कोई अन्य नहीं जानता था । उसे उस हर बारीक चीज़ की समझ थी जिसे प्रायः लोग नहीं जानते या कह लें कि उनकी आँख से वह ओझल रहती है | एक तरह से कह सकते हैं कि सिरचन लोक-कला को स्थायित्व देने वाला, स्थानीय कौशल से अपने हुनर को सही रेख देने वाला हुनरमंद कलाकार था | यदि उसकी कला एवं प्रतिभा को सही दिशा मिलती तो वह गाँव से निकलकर एक बड़े क्षेत्र में अपनी रचनात्मकता का सही परिचय दे पाता | किंतु खेद इस बात का है कि सिरचन जैसे कलाकार रोज-ब-रोज पैदा होते हैं, अभाव की चादर तानकर सोते हैं, रात-दिन खटते हैं और एक दिन नीम अँधेरे में बिना कुछ बताये इस संसार से चले जाते हैं | उनके कामों से इस तंग दुनिया की दुनियादारी चलती है | किंतु हतभाग्य ! कि उनके कामों की न सरकारें चिंता करती हैं और न ही हुकूमतें | सही अर्थों में ये कलाकार जीवन के दुर्धर्ष थपेड़ों में पैदा होते हैं और जीवन को सतरंगी उजास देने का काम करते हैं | सिरजन भी कुछ ऐसा ही है- खुद्दार, नेक-दिल एवं गैरत से भरा हुआ एक साफ-शफ्फाक कलाकार; जिसे रेणु जी ने अपनी कहानी 'ठेस' में जीवंत किया है |

सिरचन द्वारा बनाई गयी शीतलपाटी मानू के ससुराल में इतनी प्रसिद्ध हुई कि उसके परिजनों ने पटना और कलकत्ता से आये हुए मेहमानों को उसे अनगिनत बार दिखाया था । मानू की विदाई होने वाली थी और मानू के दुल्हे ने एक बार फिर खत लिखकर चेतावनी दी थी कि भले कुछ आये या न आये लेकिन चिक और पटेर की शीतलपाटी जरूर आनी चाहिए। देखने योग्य है मानू के दूल्हे के निम्नलिखित कथन जिनमें न केवल शीतलपाटी की सर्वस्वीकार्यता दिखाई पड़ती है बल्कि लोक-कलाकारों के सधे हुए हाथों की सुगंध भी महत्वपूर्ण जान पड़ती है -**"मानू के साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशेनेबलचिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के**

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

बिना आएगी मानू तो.....।"[6] सिरचन जब शीतलपाटी बना रहा होता है तो वह उसमें पूरी तरह डूब जाता है। उसका यह व्यवहार उसकी आदत में शुमार हो गया है । जब वह मानू के लिए शीतलपाटी बनाता है तो अपनी आदत के अनुसार उसमें इतना मग्न हो जाता है कि उसे किसी भी बात की सुध नहीं रहती, यह किसी भी लोक कलाकार की बड़ी विशेषता है । किसी भी तरह उसकी नज़र पास में पड़े सूप पर जाती है, उस पर चिउरा और गुड़ रखा था । चिउरा को वह खा जाता है और गुड़ को सूप के एक किनारे रख देता है ।सिरचन कहीं काम करने जाता था तो उसकी यह इच्छा रहती थी कि जहाँ जाऊँ वहाँ खाने-पीने की अच्छी चीजें मिलें । यह भावना प्रत्येक कामगार के मन में होती है । सिरचन को केवल खाने में चिउरा तथा गुड़ मिलने पर मानू का भाई उसके मन के भाव को पढ़ लेता है और दौड़कर अपनी माँ के पास चला जाता है । सिरचन को जिस घर से बहुत अधिक अपेक्षा थी वहाँ इस तरह की आव-भगत उसकी सोच से परे था। फिर भी वह अपने काम में व्यस्त रहा । किंतु कहानी के अंत में मानू की चाची ऐसा व्यंग्य करती है कि वह सिरचन को नश्तर की तरह लग जाती है | यही नहीं सबसे अधिक सिरचन को इस बात से दुःख होता है कि उसे छोटी जाति का कहकर कमतर आँका जाता है | प्रस्तुत कहानी में रेणु जी ने दिखाना चाहा है कि कलाकार की कला का मूल्य बड़ा होता है, उसकी कला उसे तमाम तरह के जातिवादी अभिकरणों से बड़ा बनाती है किंतु बड़ी जाति के लोगों का छोटा व्यवहार उन्हें न तो बड़ा बनाता है और न ही मनुष्य ही रहने देता है | प्रस्तुत कहानी में सिरचन केवल कलाकार भर नहीं है बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी उसकी बड़ी हैसियत है या कह लें कि बड़ा मुकाम है जिसे वह किसी भी हाल में नहीं छोड़ता बल्कि सदैव अपने व्यक्तित्व की बड़ी पूँजी के रूप में अपने साथ लिए रहता है | किंतु बड़बोले लोगों की अधीरता यह दिखाती है कि न तो वे भाव में बड़े हैं और न ही जाति में | यह घटना लोक के प्रत्येक कलाकार के साथ घटित होती है। कभी उसकी जाति को लेकर कटाक्ष किया जाता है तो कभी उसके काम को लेकर । मानूकी चाची द्वारा बोली गयी बात सिरचन के स्वाभिमान और आत्मगौरव को ठेस पहुँचाती है, जिस कारण वह अपनी कलाकारी को छोड़ने का प्रण कर लेता है।अंतत: मानू के भाई द्वारा मनाने पर

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

भी वह नहीं आता है | मानू का भाई कहता है- **"मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही वह बोला, 'बबुआजी! अब नहीं । कान पकड़ता हूँ, अब नहीं ।.....अब क्या?' मैं चुपचाप वापस लौट आया । समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है।"**[7]

इस कहानी के अंत में सिरचन अपनी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए स्टेशन जाकर मानू को शीतलपाटी, चिक और पटेर भेंट करता है तथा उसका पारिश्रमिक भी नहीं लेता है । इस कहानी की भाषा आम बोलचाल की भाषा है क्योंकि फणीश्वरनाथ रेणु एक आंचलिक कथाकार हैं इसलिए उनकी रचनाओं में अंचल विशेष के शब्द अधिक मिलते हैं। जैसे- मोथी घास, मोढ़े, मूँज की रस्सी, गमकौआ जर्दा आदि। इस तरह से इस कहानी में रेणु जी ने एक सच्चे कलाकार की संवेदनशीलता, स्वाभिमान और आत्मगौरवको दर्शाया है जिसका वजूद बाज़ारवाद के कारण अब नहीं रहा । पूँजीवादी और बाज़ारवादी दौर में इन लोक कलाकारों का जैसे महत्त्व ही कम हो गया है | उनके कामों को प्रायः लोग नहीं समझते । ऐसे कलाकारों को लोग बिना मजदूरी दिये केवल खाना खिलाकर, पुराना कपड़ा-लत्ता आदि देकर मानो अपना पल्ला ही झाड़ लेते हैं। आज स्थितियाँ बदली हैं, कलाकारों की मेहनत और काम करने का उनका जुनून यूँ ही बेकार न जाये, इसके लिए केंद्र सरकार 'लोकल टू वोकल' के माध्यम से लोक कलाकारों को संवर्धन दे रही है। ऐसे में उनके लिए वैश्विक स्तर पर स्वयं को निखारने का सुनहरा अवसर है ।

समग्रतः कह सकते हैं कि रेणु जी की कहानियाँ बड़े मूल्यों का रचाव करती हैं | 'ठेस' भी कुछ ऐसी ही है जो मात्र संवेदना के धरातल पर ही पाठकों को नहीं छूती बल्कि कला एवं स्थापत्य के धरातल पर भी बड़ा मूल्य पैदा करती है यही इसकी सर्वकालिकता है | रेणु जी कम शब्दों में बात करते हैं, लोक-शब्दों को रचते हैं और इन शब्दों के द्वारा बड़ी बात कह डालते हैं | यही उनकी कला एवं प्रतिभा की तीव्रता है जिसे समझने एवं उसमें अवगाहन करने की आवश्यकता है | आज जब कला एवं उसके सभी मूल्य विरूपित हो गए हैं, ऐसे

में रेणु जी की यह कहानी सर्वथा महत्वपूर्ण जान पड़ती है | जो कला के द्वारा मूल्य भी रचती है और पाठकों को सही दिशा देने का भी काम करती है |

संदर्भ:-

1. ठुमरी- फणीश्वरनाथ रेणु, फ्लैप कवर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण- 2009 ई०।
2. ठुमरी- फणीश्वरनाथ रेणु, पृ० सं०- 50, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण- 2009 ई०।
3. वही, पृ० सं०- 51
4. वही, पृ० सं०- 51
5. वही, पृ० सं०- 52
6. वही, पृ० सं०- 53
7. वही, पृ० सं०- 55